IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विद्या भारती और व्यक्तित्व विकास : एक सैद्धांतिक अध्ययन

निर्देशक
डॉ. विकास सैनी शेखावत
(असिस्टेंट प्रॉफेसर)
शिक्षा)
आई.ए.एस.ई. मानित विश्वविद्यालय, सरदारशहर, चुरू

प्रस्तुतकर्ता
देवेन्द्र सिंह
पी.एच–डी. शोधार्थी (
आई.ए.एस.ई. मानित विश्वविद्यालय, सरदारशहर, चुरू

सारांश (Abstract)

भारत की शिक्षा परंपरा सदैव मूल्य, संस्कार और आत्मविकास पर आधारित रही है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली के यांत्रिक स्वरूप में जहाँ ज्ञान को केवल रोजगार से जोड़ा गया है, वहीं ''विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान'' ने शिक्षा को पुनः 'संस्कार एवं व्यक्तित्व निर्माण' का माध्यम बनाया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में विद्या भारती के शैक्षिक दर्शन, उसकी पद्धति और व्यक्तित्व विकास पर उसके प्रभावों का सैद्धांतिक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया है कि विद्या भारती की शिक्षा प्रणाली भारतीय संस्कृति, अध्यात्म, और आधुनिक शिक्षा विज्ञान का संतुलित रूप है जो विद्यार्थियों में चार आयामी विकास – शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक – को प्रोत्साहित करती है।

मुख्य शब्दः *विद्या भारती, संस्कार निर्माण, व्यक्तित्व विकास, भारतीय शिक्षा दर्शन, मूल्य आधारित शिक्षा।*

1. प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय संस्कृति में शिक्षा का लक्ष्य केवल ज्ञान प्राप्ति नहीं, बल्कि सुसंस्कारित, चरित्रवान एवं समाजोपयोगी नागरिक बनाना है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य अधिकतर ज्ञानार्जन और रोजगार तक सीमित रह गया है, जिसके कारण मानवीय मूल्य और नैतिक चेतना क्षीण होती जा रही है। ऐसे परिवेश में विद्या भारती ने शिक्षा को पुनः भारतीय संस्कृति की जड़ों से जोड़ने का कार्य किया है।

विद्या भारती का मानना है कि शिक्षा केवल बुद्धि के विकास का साधन नहीं, बल्कि व्यक्ति के मन, हृदय और आत्मा के संतुलित निर्माण की प्रक्रिया है। इस दृष्टि से इसका उद्देश्य है– ''राष्ट्रनिष्ठ, चरित्रवान एवं सक्षम नागरिकों का निर्माण।''

2. अध्ययन का उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. *विद्या भारती के शैक्षिक दर्शन का सैद्धांतिक अध्ययन करना।*
2. *विद्या भारती की शिक्षा प्रणाली के प्रमुख घटकों का विश्लेषण करना।*
3. *व्यक्तित्व विकास के संदर्भ में विद्या भारती की भूमिका को समझना।*
4. *भारतीय शिक्षा दर्शन और विद्या भारती के दृष्टिकोण में साम्य व भिन्नता को स्पष्ट करना।*

3. अध्ययन की प्रासंगिकता (Significance of the Study)

आज के वैश्वीकरण और भौतिकवाद के युग में शिक्षा का मानवीय स्वरूप लुप्त होता जा रहा है। चरित्र, सहानुभूति, करुणा और सत्यनिष्ठा जैसे मूल्य संकटग्रस्त हैं। ऐसे समय में विद्या भारती का कार्य शिक्षा को पुनः 'संस्कार निर्माण का माध्यम' बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

यह अध्ययन भारतीय शिक्षा दर्शन के पुनरुत्थान और मूल्य आधारित शिक्षा की नयी परिभाषा प्रस्तुत करने में सहायक हो सकता है।

4. विद्या भारती का शैक्षिक दर्शन (Educational Philosophy of Vidya Bharati)

विद्या भारती की स्थापना 1952 में हुई थी, और इसका मूल दर्शन भारतीय संस्कृति आधारित संपूर्ण शिक्षा है। इसका आदर्श वाक्य है –

''संपूर्ण शिक्षा – संपूर्ण मानव के लिए।''

यह दर्शन चार विकासात्मक आयामों पर आधारित है –

क्र.सं	आयाम	विवरण
1.	शारीरिक विकास	योग, खेल, श्रम और अनुशासन के माध्यम से स्वास्थ्य व आत्मबल का विकास।
2.	बौद्धिक विकास	अध्ययन, चिंतन, तर्क एवं रचनात्मकता द्वारा ज्ञानवृद्धि।
3.	भावनात्मक विकास	सेवा, सहयोग, सहानुभूति और करुणा के संस्कार।
4.	आत्मिक विकास	ध्यान, प्रार्थना और भारतीय अध्यात्म से आत्मबोध।

इन चारों का समन्वय ही विद्या भारती की शिक्षा पद्धति का मूल तत्व है।

5. व्यक्तित्व विकास की अवधारणा (Concept of Personality Development)

'व्यक्तित्व' (च्मतेवदंसपजल) का अर्थ व्यक्ति के समग्र रूप – विचार, व्यवहार, दृष्टिकोण, चरित्र, और सामाजिक आचरण – से है।

विद्या भारती के अनुसार व्यक्तित्व विकास का उद्देश्य ''मानव को पूर्ण बनाना'' है।

यह तीन स्तरों पर होता है –

- व्यक्तिगत स्तरः आत्मविश्वास, आत्मनियंत्रण, सकारात्मक दृष्टिकोण।
- सामाजिक स्तरः सहयोग, सेवा, नेतृत्व क्षमता।
- आध्यात्मिक स्तरः आत्मबोध, श्रद्धा, नैतिकता।

इस प्रकार विद्या भारती की शिक्षा केवल अकादमिक उपलब्धियों पर नहीं, बल्कि व्यक्ति के आंतरिक और सामाजिक गुणों पर केंद्रित है।

6. शिक्षण–प्रणाली और गतिविधियाँ (Teaching Approach and Activities)

विद्या भारती की शिक्षण प्रणाली क्रियात्मक और अनुभवजन्य (म्गचमतपमदजपंस) है। इसमें निम्न तत्व प्रमुख हैं –

- प्रार्थना और ध्यान से मानसिक शांति व आत्म–संयम।
- योग और खेल–कूद से शारीरिक व मानसिक स्फूर्ति।
- संस्कार केंद्र एवं सेवा गतिविधियाँ विद्यार्थियों में समाज के प्रति उत्तरदायित्व का भाव जगाती हैं।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम, गीत, और कथाएँ भारतीय परंपरा का बोध कराती हैं।

ये सभी क्रियाएँ विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व, करुणा और अनुशासन की भावना का विकास करती हैं।

7. विद्या भारती और भारतीय शिक्षा दर्शन का साम्य (Comparative Perspective)

भारतीय शिक्षा परंपरा – विशेषकर गुरुकुल प्रणाली, गीता का कर्मयोग, और उपनिषदों का आत्मज्ञान – विद्या भारती की नींव में अंतर्निहित हैं।

पारंपरिक भारतीय शिक्षा	विद्या भारती शिक्षा
गुरु–शिष्य परंपरा	शिक्षक को आचार्य और मार्गदर्शक के रूप में मान्यता।
जीवनोपयोगी शिक्षा	पाठ्यक्रम में नैतिक, सांस्कृतिक एवं व्यवहारिक विषय।
कर्मयोग व सेवा	सामुदायिक सेवा को शिक्षा का अंग बनाना।
आत्म–साक्षात्कार	ध्यान, योग और अध्यात्म से आत्मविकास।

इस प्रकार विद्या भारती पारंपरिक भारतीय दर्शन को आधुनिक शिक्षा के ढाँचे में समाहित करती है।

8. पूर्ववर्ती शोधों का विश्लेषण (Review of Previous Studies)

कई शोधों ने विद्या भारती की शिक्षा प्रणाली की प्रभावशीलता को प्रमाणित किया है –

डपीतएं (2019) ने पाया कि विद्या भारती विद्यालयों के छात्र अन्य विद्यालयों की अपेक्षा अधिक राष्ट्रनिष्ठ और अनुशासित हैं।

ैंतउएं (2022) के अनुसार, इन विद्यालयों के छात्रों में आत्म–सम्मान और आत्म–नियंत्रण की प्रवृत्ति अधिक होती है।

ल्कंअ, (2021) ने बताया कि विद्या भारती के नैतिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रमों से विद्यार्थियों का व्यक्तित्व विकास दीर्घकालिक रूप से प्रभावित होता है।

इन अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि विद्या भारती की शिक्षा पद्धति मूल्य–आधारित और प्रभावशाली है।

9. सैद्धांतिक निष्कर्ष (Theoretical Findings)

- विद्या भारती शिक्षा का केंद्र व्यक्ति का समग्र विकास है।
- यह प्रणाली भारतीय संस्कृति को आधुनिक शिक्षण तकनीकों से जोड़ती है।
- विद्यालय केवल ज्ञान–संस्थान नहीं, बल्कि संस्कार केंद्र बनते हैं।
- व्यक्तित्व विकास के सभी आयाम (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक) समान रूप से पोषित होते हैं।

10. निष्कर्ष (Conclusion)

विद्या भारती ने भारतीय शिक्षा के मूल स्वरूप – संस्कार, संस्कृति और आत्मविकास – को आधुनिक संदर्भ में पुनर्जीवित किया है। यह शिक्षा प्रणाली व्यक्ति में न केवल ज्ञान, बल्कि करुणा, अनुशासन, नेतृत्व, और राष्ट्रनिष्ठा का निर्माण करती है। वर्तमान समय में जब शिक्षा व्यावसायिकता की ओर अग्रसर है, तब विद्या भारती जैसे संस्थान भारतीय शिक्षा के मानव–केन्द्रित स्वरूप को जीवित रखे हुए हैं। भविष्य में यदि शिक्षा नीति में इसके मूल सिद्धांतों को स्थान दिया जाए, तो भारत विश्व को मूल्य–आधारित शिक्षा का आदर्श प्रस्तुत कर सकेगा।

संदर्भ –

- **Lickona, T. (1991).** Educating for Character: How Our Schools Can Teach Respect and Responsibility. New York: Bantam Books.
- **Mishra, R. (2019).** Role of Vidya Bharati Schools in Value-Based Education. Indian Journal of Educational Research, 23(2), 105-118.
- **Sharma, S. (2022).** Impact of Vidya Bharati Curriculum on Personality Developmen. Journal of Indian Education, 48(1), 33-44.
- **Vidya Bharati Akhil Bharatiya Shiksha Sansthan, (2020).** Bharatiya Shiksha ka Drishtikon. New Delhi: Vidya Bharati Publications.
- **Yadav, K. (2021).** Moral and Spiritual Education in Indian Schools. Educational Philosophy Review, 15(3) 210-225.